

कृतित्व

* 'भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व !'
हिंदी साहित्य का बड़े प्रथम प्रभात था, जब भारतेन्दु ने

शरस्वती के वीणा में जागरण का स्वर मरा था।
नील गगन में सांध्य तारा का, भावस में प्रथम
फुहार का तथा माला में प्रथम मणि का जो खणीय
और महत्वपूर्ण स्थान है वही स्थान नवयुग प्रवर्तक
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का है।

देश में दैन्य की प्रचण्ड ज्वाला
धु-धु जलती देखकर जब रीतिकालीन कवि किसी
अज्ञात नारी (नायिका) को अमिसार का उपदेश सुना
रही थी। जब कविता कल्याणी सभा की परी
बना रही थी और राधा-कृष्ण की डाढ़ में
कुल्लित प्रेम सत्र-सहस्र उद्भावनाएँ की जा रही
थी। उसी समय प्रगति की पताका और राष्ट्रीयता
का झंडा लिए तरुणार्थ के भक्त कवि भारतेन्दु
हरिश्चन्द्र जी ने हिंदी साहित्य के प्रांगण में
पदार्पण किए और हमें सर्वप्रथम यह राष्ट्र
द्वनि सुनाई दी —

आवहूँ - रो लहूँ सब मिलके सब भारत भाई
हो - हो भारत दुर्दशा न अब देखी जाई

भारतेन्दु कलयुग के कर्तृमा थे। लम्बा कद,
इकहरा बदन, न अत्यंत कुशा, न मोटा थे, आँखें
कुछ मोटी, नाक सुडौल, कान कुछ बड़े जिस पर
धुंधराले जालों की लटे बलझाती थी, सुन्दर (उन्नत)
हालात, जो इनके भाग्य का ज्योतिषक था। दूर
से इनकी कविता सुनकर लोग आकृष्ट होते
थे और समीप आ प्रथम - सुंदर धुंधराले जालों
वाली मधुर मुक्ति देखकर बलिहारी होते थे।

व्यथाप कुमार

ये शुकवि थे, सुलेखक थे, नाटककार थे, नट थे,
 समाज सुधारक थे, देश भक्त थे, मौलिक कलाकार
 थे + और क्या नहीं थे। इनकी प्रतिभा इतनी
 प्रबल और प्रखर थी कि ये अंग्रेजी लिखने वहाँ
 की भी पीछे छोड़ देते थे। इनकी आसकवित्व
 इतनी प्रबल थी कि वह 'अधैर्य नगरी' एक
 ही दिन में लिख डाली और 'विजय वैजंती'
 की रचना तो समा होने के कुछ देर बाद ही
 लिख डाली। इनकी प्रतिभा देखकर जब पंडित
 रघुनाथ ने इन्हें 'भारतेन्दु' की उपमा ^{संसारसुधानिधि}
 पत्र में प्रस्ताव दिया था और सभी ने मुक्त
 कंठों से समर्थन दिया था, तभी से ये
 भारतेन्दु कहलाने लगे।

तरुणार्थ के इस मस्ताने कवि
 पर सरकार की बुरा दृष्टि तो थी ही इधर
 स्वजनों की उपेक्षा, उदासीनता और कृतज्ञता ने
 इनके हृदय को और भी जर्जर बना दिया।
 फलतः 6 जनवरी 1885 ई० की पौनेदस बजे रात
 में भारत का यह चन्द्र सदा के लिए अस्त हो
 गया। हम इनके चरणों में और भी निवेदित
 हो लेना चाहते थे। पैंतीस वर्ष की अल्प आयु
 में अगर कालराजू ने इन्हें असमय ही अस्त
 कर लिया फिर भी हमारी झोपड़ियों में
 इनकी धवल ज्योत्स्ना आलोक और अमृत
 बिखेर रही है। तभी तो कहा जाता है—

'जैजैरो से जफड़ देश को राह दिखई थी तूने
 जो सोने काल भी बुझा सके वो समाजदर्प भी तूने
 धनधोर तिमिर के आगत में तूने बीज उजा के योग्य'

आवाज लगाई थी तूने जल सारा भारत खींचा था।
—x x—x —x—x—